

Жума намозининг ракъати



20:12 / 26.10.2023 1648

هُنَّ عَجَلٌ لِيَايَ ضَرُّ مَعْلَاقِ
يَلْصِقُ دَمْحُمِ نَأْسِلُ يَلْعَقُ رِصْقَ رِيغِ مَأْمَتِ نَاتِعِ كَرِّ رَفْسِ لَأْةِ صَوِّ نَاتِعِ كَرِّ يَخْضَأُ لَأْ
ةِ جَامِ نُبَاوِ دَمْحِ أَوْ يَأْسِنُ لَأْ هَاوِرِ. مَلْسُو هَيْلِ لَأْ
لَأْ صِلَالِ كَرْدَا دَقَفَ ةِ كَرِّ عَجَلِ لَأْ صَوْمِ كَرْدَا نَمِ يَزْمُرُ لَأْ أَوْ يَأْسِنُ لَأْ
نَاتِعِ كَرِّ لَأْ هَاتِ أَفْ نَمِ، يَخْأُ هَيْلِ لَأْ صِيْلَفَ ةِ كَرِّ عَجَلِ لَأْ نَمِ كَرْدَا نَمِ يَنْطِقُ رَادِلِ لَأْ
أَعْبَرَأُ لَأْ صِيْلَفِ.

Умар розияллоҳу анҳудан ривоят қилинади:

«Жума намози икки ракъатдир. Рўза ҳайити намози икки ракъатдир. Қурбон ҳайити намози икки ракъатдир. Сафар намози икки ракъатдир, тўлиқдир, қаср эмасдир. Муҳаммад соллаллоҳу алайҳи васалламнинг тилларидандир».

Насоий, Аҳмад ва Ибн Можа ривоят қилишган.

Насоий ва Термизийнинг ривоятларида:

«Ким жума намозидан бир ракъатни топса, батаҳқиқ, намозни топган бўлади», – дейилган.

Дорақутнийнинг ривоятида эса:

«Ким жумадан бир ракъатни топса, унга бошқа бир ракъатни қўшсин. Кимдан икки ракъат ҳам ўтган бўлса, тўрт ракъат ўқисин», – дейилган.

